vinetur

फ्रांस के सांसदों ने अंगूर की बेलों की नर्सरियों के लिए €30 मिलियन की आपात सहायता मांगी

सांसदों के मुताबिक, पांच वर्षों में उत्पादन 50% घटा है और तीन साल में बेलों के 56 मिलियन पौधे बिना बिके रह गए

शुक्रवार, 20 नवंबर 2026



फ्रांस में अंगूर की बेलों की नर्सरियां €30 मिलियन के आपात सहायता पैकेज की मांग कर रही हैं। शराब उद्योग में मंदी गहराने से इस क्षेत्र पर दबाव बढ़ रहा है, जो पुराने अंगूर के बागों को फिर से लगाने के लिए जरूरी नई बेलों की आपूर्ति करता है।

गुरुवार, 19 नवंबर को विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसदों ने कहा कि उन्होंने फ्रांस सरकार को पत्र लिखकर बेलों की नर्सरियों के लिए राष्ट्रीय आपात योजना की मांग की है। सांसदों के मुताबिक, शराब उद्योग के व्यापक संकट से यह क्षेत्र कमजोर हुआ है और अब इसे तत्काल सार्वजनिक सहायता की जरूरत है।

यह अपील दिखाती है कि फ्रांस के शराब बाजार का दबाव उत्पादकों और वाइनरी से आगे बढ़कर आपूर्ति श्रृंखला के अन्य

कारोबारों तक पहुंच रहा है। बेलों की नर्सरियां वे पौधे तैयार करती हैं जिन्हें अंगूर उत्पादक पुरानी बेलों को बदलने, खेतों में दोबारा रोपाई करने और समय के साथ अपने बागों को नए सिरे से ढालने के लिए खरीदते हैं। यदि यह व्यवस्था और कमजोर हुई, तो अंगूर के बागों का नवीनीकरण धीमा पड़ सकता है और उत्पादन में बदलाव के प्रयास जटिल हो सकते हैं। यह शराब कारोबार और फ्रांसीसी शराब से जुड़े व्यापक पेय क्षेत्र के लिए चिंता का विषय है।

सांसदों के मुताबिक, पिछले पांच वर्षों में नर्सरियों का उत्पादन आधा रह गया है। उन्होंने यह भी कहा कि पिछले तीन वर्षों में बेलों के 56 मिलियन पौधे नहीं बिके। यह दिखाता है कि शराब उत्पादकों द्वारा रोपाई और निवेश घटाने के साथ मांग कितनी तेजी से कम हुई है।

Agra की रिपोर्ट के अनुसार, सांसदों ने लिखित रूप में सरकार को इस स्थिति से अवगत कराया। यह अपील किसी एक राजनीतिक खेमे की ओर से नहीं आई, जो क्षेत्र की हालत और जल्द सहायता नहीं मिलने पर और नुकसान की आशंका को लेकर व्यापक चिंता का संकेत है।

फ्रांस के शराब उद्योग की अर्थव्यवस्था में नर्सरी क्षेत्र का हिस्सा छोटा है, लेकिन इसकी भूमिका अहम है। नर्सरियां बेलों के पौधे तैयार और विकसित करने के बाद उन्हें रोपाई के लिए अंगूर उत्पादकों को बेचती हैं। उनका कारोबार काफी हद तक शराब उत्पादकों के दीर्घकालिक फैसलों पर निर्भर करता है। उत्पादक आम तौर पर धीरे-धीरे दोबारा रोपाई करते हैं और अंगूर के बागों में बदलाव की योजना कई साल पहले बनाते हैं। जब ये फैसले टल जाते हैं या रद्द हो जाते हैं, तो नर्सरियों के पास ऐसे पौधे बच सकते हैं जिन्हें समय रहते बेचना संभव नहीं होता।

मौजूदा संकट के केंद्र में यही असंतुलन नजर आता है। सांसदों के आंकड़े बताते हैं कि ऑर्डर में तेज गिरावट आई है और बिना बिके पौधों का भंडार बढ़ गया है। नर्सरी के लिए बिना बिके पौधे जल्दी ही वित्तीय नुकसान में बदल सकते हैं, क्योंकि बिक्री से काफी पहले ही उत्पादन लागत लग जाती है। साथ ही, ये पौधे जल्दी खराब होने वाली व्यावसायिक सामग्री हैं, जिन्हें बिना किसी नुकसान के अनिश्चितकाल तक भंडारित नहीं किया जा सकता।

आपात वित्तीय सहायता की मांग फ्रांस की अंगूर की खेती में जारी बदलाव के पैमाने को भी उजागर करती है। पांच वर्षों में नर्सरियों के उत्पादन में 50% की गिरावट बताती है कि यह कटौती किसी एक फसल या क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि भविष्य के अंगूर के बागों के लिए पौधों की आपूर्ति को प्रभावित कर रही है। यह अहम है, क्योंकि नर्सरी क्षेत्र न केवल पुरानी बेलों को नियमित रूप से बदलने में मदद करता है, बल्कि अंगूर की किस्मों, रूटस्टॉक और रोपण सामग्री में बदलाव भी संभव बनाता है, जिनकी जरूरत बाजार में बदलाव और पर्यावरणीय दबावों के जवाब में उत्पादकों को पड़ सकती है।

गुरुवार, 19 नवंबर को प्रकाशित जानकारी में प्रस्तावित €30 मिलियन के पैकेज का विस्तृत ब्योरा तत्काल उपलब्ध नहीं था। Agra की रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि सरकार की ओर से तत्काल कोई सार्वजनिक प्रतिक्रिया नहीं आई। यह भी स्पष्ट नहीं था कि सांसद नर्सरियों के बीच राशि किस तरह बांटना चाहते हैं या वे सीधे सहायता, अस्थायी राहत उपाय अथवा व्यापक पुनर्गठन योजना की मांग कर रहे हैं।

फिर भी, यह मांग इस बात का एक और संकेत है कि फ्रांस में शराब उद्योग की मंदी उत्पादन श्रृंखला के भीतर और गहराई तक पहुंच रही है। पेय कंपनियों और शराब उत्पादकों को नर्सरी क्षेत्र की स्थिति मौजूदा बिक्री से दूर की बात लग सकती है, लेकिन इससे तय हो सकता है कि आने वाले वर्षों में अंगूर के बागों में क्या लगाया जा सकेगा। नर्सरियों का लंबे समय तक कमजोर बने रहना उत्पादकों की लचीलापन घटा सकता है, जबकि उद्योग के कुछ हिस्से बदलती मांग और देश में अंगूर के बागों के घटते क्षेत्रफल के अनुरूप ढलने की कोशिश कर रहे हैं।

गुरुवार, 19 नवंबर को सांसदों की यह पहल बताती है कि वे इस समस्या को चक्रीय नहीं, बल्कि तत्काल कार्रवाई की मांग करने वाला मानते हैं। उनका कहना था कि तेजी से सहायता नहीं मिली, तो पहले से कमजोर नर्सरी क्षेत्र को और नुकसान हो सकता है, जिसके असर नर्सरियों से कहीं आगे तक महसूस किए जा सकते हैं।